बी॰ए॰ भाग-3
हिन्दी-प्रतिष्ठा
काव्यशास्त्र (कहानी)

रमेश कुमार यादव
हिन्दी-विभाग
डी॰ के॰ कॉलेज
डुमरांव (बक्सर)

कहानी की अवधारणा :-

'कहानी' का प्राचीन नाम संस्कृत में 'गल्प' या आख्यायिका मिलता है, लेकिन आधुनिक युग में 'कहानी' के नाम से जिन रचनाओं का अवतरण हुआ वे संस्कृत साहित्य में 'गल्प' अथवा 'आख्यायिका' के नाम से मिलने वाली रचनाओं से अलग है। हिन्दी की आधुनिक कहानी का जन्म वर्तमान युग की आवश्यकताओं के कारण हुआ। अपने वर्तमान रूप में यह विधा अंग्रेजी साहित्य से होकर हिन्दी में आयी। कहानी को पश्चिम में 'शार्ट-स्टोरी' कहा जाता है। पाश्चात्य देशों में एडगर एलन पो आधुनिक कहानी के जन्मदाताओं में प्रमुख माने जाते हैं। उन्होंने कहानी की परिभाषा देते हुए कहा है कि "छोटी कहानी एक ऐसा आख्यान है, जो इतना छोटा है कि एक बैठक में पढ़ा जा सके और जो पाठक पर एक ही प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से लिखा गया हो। वह स्वतः पूर्ण होती है।"

मुंशी प्रेमचंद कहानी पर विचार करते हुए कहते हैं कि "कहानी (गल्प) एक रचना है, जिसमें जीवन के किसी एक अंग या मनोभाव को प्रदर्शित करना ही लेखक का उद्देश्य रहता है। उसके चरित्र, उसकी शैली तथा कथा विन्यास

सब उसी एक बात को पुष्ट करते हैं।"

सच तो यह है कि कहानी को किसी परिभाषा में बांध पाना इतना आसान नहीं है। कहानी के लक्षणों या विशेषताओं को ध्यान में रखकर हम कह सकते है कि कहानी कथा तत्व-प्रधान ऐसा खंड प्रबंधात्मक गद्य रूप है, जिसमें जीवन के किसी एक अंश, एक स्थिति या तथ्य का उत्कट संवेदना के साथ स्वतः पूर्ण और प्रभावशाली चित्रण किया जाता है। इस साहित्यिक गद्य रूप में गठन, तीव्रता और प्रभाव अन्विति का विशेष ध्यान रखा जाता है।

उपन्यास की भांति कहानी भी कथा तत्व प्रधान गद्य विधा है। उपन्यास की भांति कहानी के तत्व निर्धारित करने में विद्वानों ने एक ही पद्धति अपनायी है और छह तत्व निर्धारित किये हैं - कथानक, पात्र अथवा चरित्र-चित्रण, संवाद, वातावरण, शैली, उद्देश्य। समीक्षकों ने इन तत्वों को कहानी की समीक्षा के लिए अपनी सुविधा से निर्धारित कर लिए हैं। कहानी के तत्वों के रूप में इन छह बातों को ज्यों-का-त्यों स्वीकार नहीं किया जा सकता। उदाहरण के लिए आज-कल कितनी ही कहानियां ऐसी लिखी जा रही हैं, जिनमें कथानक का वह स्वरूप नहीं मिलता जिसकी हम आरंभ से लेकर चरम सीमा तक उल्लेख करते हैं। ऐसी कहानियां लिखी गयी हैं या लिखी जा सकती हैं, जिनमें संवाद बिलकुल न हों।

हिन्दी कहानी की अब तक की विकास-यात्रा लगभग सौ वर्षों की ऐसी यात्रा है जिसमें जल्दी-जल्दी परिवर्तन होते रहे हैं। उसकी विकास-गति तीव्र और अपने समय संदर्भों से घनिष्ठ रूप से जुड़ी रही है। उल्लेखनीय तथ्य यह है कि हिन्दी कहानी ने बहुत कम समय में एक श्रेष्ठ साहित्यिक विधा का रूप प्राप्त कर लिया। इसका प्रमुख कारण यह है कि आरंभ में ही कुछ महत्वपूर्ण रचनाकारों ने अपनी प्रतिभा से उसे प्रारंभिक दौर की लड़खड़ाहट और अनगढ़पन से मुक्त कर दिया। चंद्रधर शर्मा 'गुलेरी' की 'उसने कहा था' कहानी की गणना हिन्दी की श्रेष्ठ कहानियों में होती है। यह कहानी 1915 ई० में प्रकाशित हुई थी। मधुरेश ने लिखा है, "उसने कहा था" वस्तुतः हिन्दी की पहली कहानी है, जो शिल्प विधान की दृष्टि से हिन्दी कहानी को एक झटके में प्रौढ़ बना देती है। प्रेम, बलिदान और कर्तव्य की भावना से अनुप्राणित तमाम कहानियां लिखी गयी हैं किन्तु यह कहानी अपनी मार्मिकता और सघन गठन के कारण आज भी अद्वितीय बनी हुई है। हिन्दी कहानी के उद्भवकाल में ही ऐसी श्रेष्ठ रचना का प्रकाशित होना एक महत्वपूर्ण घटना है।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने 'इंदुमती' (किशोरीलाल गोस्वामी) 'गुलबहार' (किशोरीलाल गोस्वामी

'प्लेग की चुड़ैल' (मास्टर भगवानदास) 'ग्यारह वर्ष का समय' (रामचंद्र शुक्ल) 'पंडित और पंडितानी' (गिरिजादत्त वाजपेयी) और 'दुलाईवाली' (बंग महिला) को सामने रखकर हिन्दी की पहली मौलिक कहानी का निर्णय किया है। ये कहानियां क्रमशः 1900 ई से लेकर 1907 के बीच लिखी गयी हैं। इन पर विचार करते हुए शुक्ल जी ने लिखा है, इनमें यदि मार्मिकता की दृष्टि से भावप्रधान कहानियों को चुनें तो तीन मिलती हैं - 'इंदुमती' 'ग्यारह वर्ष का समय' और 'दुलाई वाली'। इंदुमती किसी बंगला कहानी की छाया नहीं है तो हिन्दी की यही पहली मौलिक कहानी ठहरती है। इसके उपरान्त 'ग्यारह वर्ष का समय' फिर 'दुलाई वाली' का नंबर आता है।

आचार्य शुक्ल के बाद हिन्दी की पहली मौलिक कहानी को ढूंढने के क्रम में काफी अनुसंधान हुआ। इंदुमती को शेक्सपियर के 'टेम्पेस्ट' की छाया कहकर विद्वानों ने उसे मौलिक कहानी के दायरे से बाहर कर दिया। देवी प्रसाद वर्मा ने सन् 1901 में 'छत्तीसगढ़ मित्र' में छपी माधव सप्रे की कहानी 'एक टोकरी भर मिट्टी' को हिन्दी की पहली मौलिक कहानी सिद्ध किया। डॉ. बच्चन सिंह ने किशोरी-लाल गोस्वामी की ही एक दूसरी कहानी 'प्रणयिनी परिणय' को पहली कहानी माना है।

उनके अनुसार यह कहानी सन् 1887 ई० में लिखी गयी थी। ऐसी स्थिति में माना जा सकता है कि हिन्दी कहानी की विकास-यात्रा 1887 ई० से शुरु हुई।

हिन्दी कहानी के समूचे विकास क्रम को हम निम्नलिखित उपशीर्षकों के अंतर्गत विभाजित कर सकते हैं। (1) आरंभिक हिन्दी कहानी, (2) प्रेमचंद युगीन हिन्दी कहानी, (3) प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी, (4) स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कहानी, (5) समकालीन हिन्दी कहानी। प्रेमचंदोत्तर हिन्दी कहानी के विकासक्रम में नयी कहानी, अकहानी, सचेतन कहानी, सक्रिय कहानी, सहज कहानी आदि- अनेक छोटे-बड़े कथा आन्दोलन संगुफित हैं। 1954 ई० में 'कहानी' पत्रिका का दुबारा प्रकाशन आरंभ हुआ था। सन् 1960 से भैरव प्रसाद गुप्त के संपादन में 'नयी कहानियां' नामक पत्रिका प्रकाशित होने लगी और आलोचकों ने 1954 ई० के बाद की कहानी को 'नयी कहानी' कहना शुरु कर दिया।

रमेश कुमार यादव
असिस्टेंट - प्रोफेसर
हिन्दी - विभाग
डी. के. कालेज, डुमरॉव
बक्सर (बिहार)